विचार बिन्दु

सज्जन पुरुष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी पुरुष को पीड़ित नहीं करता। –सी. न्यूमैन

गांधी जयंती: आदर्शों पर चलने का दिन या रस्म अदायगी!

आज गांधी जयंती है। उस शख्सियत का जन्मदिन, जो आधुनिक विश्व इतिहास में सर्वाधिक आदर पाने वाले व्यक्तियों में से एक हैं। किसी महान व्यक्ति को जब हम किसी निर्धारित दिन याद करते हैं तब उसके आदर्शों व उसकी बताई राह पर चलने के लिये फिर से अपने को तैयार करते हैं। यह उसकी विरासत को संजोना भी होता है। गांधी की जीवन यात्रा को दर्शाता एक म्यूज़ियम 'गांधी वाटिका' आज राजस्थान की राजधानी जयपुर में खुल रहा है। इस म्यूज़ियम का निर्माण पिछली अशोक गहलोत सरकार ने राजकोष से कराया था। कहते हैं इसके निर्माण पर 85 करोड़ रुपये खर्च किए गये। विधानसभा चुनावों के पहले गहलोत ने इसका उद्घाटन भी कर दिया था। मगर उद्घाटन के बावजूद उनके ही कार्यकाल में यह म्यूज़ियम बंद ही रहा। चुनावों में मतदाताओं ने गहलोत की सरकार को नकार दिया। नई बनी विपरीत ध्रुव की सरकार, जिसकी पार्टी का गांधी से लगाव कभी नहीं रहा, ने चुनाव से पहले पिछली सरकार के ताबड़तोड़ किये गये कामों तथा फैसलों की समीक्षा में इस म्यूज़ियम को भी लिया तब इस पर आपत्ति उठी कि जब इसका निर्माण सरकारी पैसे से हुआ है तो उसे चलाने के लिये किसी ट्रस्ट को क्यों सौंपा जाय। सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी जिस विचारधारा की उपज है उसका महात्मा गांधी के प्रति रवैया जग जाहिर है। किन्तु जयपुर में बनाये गये इस म्यूज़ियम को राजस्थान की भजनलाल सरकार द्वारा स्क्रेप कर देना असंभव था। उसने समझदारी का फैसला लेते हुए इस म्यूज़ियम को पर्यटन विभाग के जरिए खुद चलाने का फैसला किया। एक सरकारी विज्ञिप्त के अनुसार युवा पीढ़ी गांधीजी और उनके दर्शन से प्रेरणा ले सके, इसके लिए देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों की यहां यात्रा भी करायी जाएगी। इसके लिए गांधी वाटिका म्यूजियम को पर्यटन विभाग की सूची में शामिल किया जाएगा। साथ ही, गांधीजी के दर्शन पर बनी विभिन्न फिल्मों के माध्यम से सत्य एवं अहिंसा के संदेशों को प्रसारित किया जाएगा। अब यह सवाल उठना स्वाभाविक ही है कि क्या महात्मा गांधी का उपयोग पर्यटन और मनोरंजन उद्योग के लिये रह गया है? क्या इसी प्रकार गांधी की विरासत बचाई जा सकेगी? सोशल मीडिया की गलियों में भटकती नई पीढ़ी तो यह सवाल भी कर रही है कि क्या गांधी को याद करने की आज ज़रूरत भी है?

महात्मा गांधी ने राजनीति में पवित्रता लाने का प्रयास किया। उनके लिए राजनीति सत्ता पाने के लिए नहीं बल्कि जनसेवा के लिए थी। वे समाज को बदलना चाहते थे। उनका सारा जीवन एक ऐसा समाज बनाने में लगा रहा जहां राज्य हो, मगर उसकी सत्ता तिरोहित हो जाए। इसी को उन्होंने रामराज्य कहा। इसका अर्थ राजा वाली पुरानी सामंती सत्ता नहीं बल्कि प्रत्येक मनुष्य की ऐसी सत्ता हो जो किसी दूसरे की सत्ता का अतिक्रमण न करे। वे प्रत्येक गांव को एक इकाई के रूप में देखना चाहते थे जो अपने वाशिंदों की जरूरतें खुद पूरी करने में सक्षम और समर्थ हो। वे मुतमइन थे कि सत्य और अहिंसा से ऐसा समाज, ऐसा गांव और ऐसा राज्य बनाना संभव है। इसके लिए ही वे लोगों को तैयार करने में अपनी सारी उम्र लगे रहे। उन्होंने राजनीति की बजाय समाज के स्तर पर मूलभूत हस्तक्षेप किया। उन्होंने इसकी नींव लोगों के बीच आपसी भाई-चारे की बनाई। धर्म, वर्ण, जाति से परे उनकी रामराज्य की कोई अलौकिक अवधारणा नहीं थी। उनका रामराज्य मानव धर्म पर आधारित था। इसीलिए आचरण की शुद्धता उनके लिए बहुत मायने रखती थी। आज इस सवाल के साथ यह भी कहा जा रहा है कि गांधी की बात करना हमारी झूठी संतुष्टि और हमारे पाखंड का दिखावा भर है। ऐसे सवाल इन दिनों कुछ और तरीक़ों से भी पूछे जा रहे हैं। इनमें एक तरीक़ा गांधी पर पिस्टल से तीन गोलियां दाग कर उनकी हत्या करने वाले का बचाव करना भी है जो अब सोशल मीडिया पर तो एक ट्रेंड जैसा बन चुका है। गांधी की हत्या नर हत्या तो थी ही साथ ही वह एक विचार की हत्या का भी असफल प्रयास था। गोली चलाने वाले ने गांधी के प्राण तो ले लिये लेकिन वह उनके विचारों को खरोंच भी नहीं लगा पाया। इसीलिए सबके बापू आज भी लोक में ज़िंदा हैं। उन्हें खत्म करने वाली विचारधारा वाले नेताओं को भी उन्हें स्वीकार करना पड़ रहा है।

महात्मा गांधी ने राजनीति में पवित्रता लाने का प्रयास किया। उनके लिए राजनीति सत्ता पाने के लिए नहीं बल्कि जनसेवा के लिए थी। वे समाज को बदलना चाहते थे। उनका सारा जीवन एक ऐसा समाज बनाने में लगा रहा जहां राज्य हो, मगर उसकी सत्ता तिरोहित हो जाए। इसी को उन्होंने रामराज्य कहा। इसका अर्थ राजा वाली पुरानी सामंती सत्ता नहीं बल्कि प्रत्येक मनुष्य की ऐसी सत्ता हो जो किसी दूसरे की सत्ता का अतिक्रमण न करे।

गांधीजी का जीवन किसी ऐसी नदी की भांति था जिसमें कई धाराएं मौजूद थीं। उनके अपने जीवन में शायद ही ऐसी कोई बात रही हो जिस पर उनका ध्यान नहीं गया हो या फिर उन्होंने उस पर अपने विचारों को प्रकट नहीं किया हो। आज़ादी की लड़ाई के साथ-साथ उन्होंने छुआछूत उन्मूलन, हिंदू-मुस्लिम एकता, चरखा और खादी को बढ़ावा, ग्राम स्वराज का प्रसार, प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा और परंपरागत चिकित्सीय ज्ञान के उपयोग सहित तमाम दूसरे उद्देश्यों पर काम करना जारी रखा था। अपने इस काम के लिये वे देश के कोने-कोने में गये। अपने विरोध और अलोकप्रिय हो जाने की परवाह किये बगैर उन्होंने लोगों को कड़वी सच्चाई बताने का काम भी जारी रखा। भले ही सत्य और अहिंसा के उनके प्रयोग बड़े स्तर पर नहीं पहुंच सके, लेकिन इससे कई लोगों के जीवन को नई दिशा अवश्य मिली। बापू को जानने भर से या फिर महज़ एक बार मिलने भर से अनेक लोगों ने अपनी पूरी ज़िंदगी उनके सिद्धांतों को अपनाने में लगा दी। गांधी के दौर में, उनकी प्रेरणा और उनकी शख्सियत के असर से बड़े पैमाने पर लोग बुराई त्याग कर अच्छे इन्सान बनने में कामयाब हो पाये। देश के बंटवारे के दौरान जब सांप्रदायिकता ने लोगों की अच्छाइयां छीन ली थी जिससे बड़े पैमाने पर हिंसा का दंश झेलने को मिला किन्तु अपने को असहाय महसूस करने और अकेले में प्रलाप करने के बजाय गांधी अपने जीवन के अंतिम दिन तक आम लोगों के आंसू पोछने और घायल मानवता पर प्रेम का मलहम लगाते रहे। उन्होंने रास्ता दिखाया कि जब सपने ध्वस्त होने लगें तो हमें क्या करना चाहिए। आज़ादी मिलने पर दिल्ली में हुए जश्न में वे शरीक नहीं थे। उस दिन वे सांप्रदायिक हिंसा की आग बुझाने के लिए कोलकाता में बैठ कर लोगों के मनों को मिला रहे थे।

सार्वजनिक जीवन वाले किसी भी शख्स का हम लोग जिस तरह से आकलन करते हैं उसी तरह से गांधी के जीवन का भी कठोरता के साथ आकलन होता रहा है। उनकी ख़ूब आलोचना भी होती रही है। लेकिन ध्रुवीकरण को बढ़ावा देने वाली दूषित राजनीति में गांधी को खलनायक के रूप में प्रस्तुत करने के लिये इन दिनों फेक कहानियां ग़ढ़ना और उनका आभासी दुनिया में प्रसार आम हो चला है जो भारतीय समाज का मानवीय ताने-बाने को तार- तार कर रहा है। महात्मा गांधी जिस तरह लोगों के हृदय से डर निकालने में कामयाब रहे, उस हद तक कायमाब शायद ही कोई दूसरा होगा। अब तो नेता केवल डर दिखा कर नफरत का माहौल बनाते हैं। गांधी को मौत से कभी डर नहीं लगा और ना ही उनमें सत्ता की भूख थी। उन्होंने लोगों को घृणा छोड़ कर प्रेम करना सिखाया। उन्होंने सत्य और अहिंसा पर अडिग रहते हुए निराश हुए बिना संघर्ष करना सिखाया। गांधी की अहिंसा ने बिना किसी हिंसा के बहादुरी से लड़ना सिखाया। अन्याय के ख़िलाफ़ अहिंसक संघर्ष का उन्होंने मंत्र दिया। उनका प्रेम, त्याग, दूसरों पर भरोसा और सहअस्तित्व का संदेश आज के असुरक्षित समय और कलह से भरी दुनिया में पहले किसी भी समय से अधिक प्रासंगिक हैं। उनकी राह मानवता, सहअस्तित्व, दृढ़ मनोबल और शांति की राह है। इन्हीं रास्तों पर चलने वाले कई लोग ऐसे भी होंगे जिन्होंने गांधी को कभी रूबरू नहीं देखा। ऐसा भी नहीं है कि गांधीजी ने कोई नये रास्ते बताये। अच्छाई पर चलने के रास्ते पहले से मौजूद थे। बापू ने उनको फिर से चलन में लाकर हमें बेहतर इन्सान बताने की चेष्टा की। गांधी जयंती पर उन्हें सूत की माला पहनाने की रस्मअदायगी करने की बजाय उनकी बताई राह पर चलना ज्यादा महत्वपूर्ण है। मुनाफे के बाजार की शक्तियां इन दिनों गांधी को मार्केटिंग गुरु और ग्रेट कम्यूनिकेटर के तौर पर पेश करके अपनी दुकाने सजा रहीं हैं। गांधी की मूल्यवान असल विरासत में इन बाज़ारवादियों की कोई दिलचस्पी नहीं है। यह सही है कि गांधी के आदर्शों को मानना काफ़ी मुश्किल है। गांधी ने स्वयं कहा था कि वे जिन आदर्शों की बात करते हैं उन्हें शत-प्रतिशत हासिल करना आसान नहीं है। इसलिए वे चाहते थे कि हम वैसे आदर्शों को पाने के प्रयास में सतत लगें रहें। यही वजह है कि गांधी जीवन भर ख़ुद को बेहतर बनाते रहे। वे हमेशा उच्च स्तर को हासिल करने की कोशिश करते रहे। गांधीजी कभी नहीं चाहते थे कि लोग उनके सामने समर्पण करें। गांधी को मानने के लिए हमें टोपी या धोती पहनने की ज़रूरत नहीं है और ना ही ब्रह्मचर्य को अपनाने की ज़रूरत होगी। लेकिन हमें किसी से घृणा की ज़रूरत नहीं है। किन्तु आज की राजनीति एकदम अलग तरीक़े की हो गई है जहां घृणा और असुरक्षा की भावना को बढ़ावा देकर उसे जीने का रास्ता बना दिया गया है। आज हमें ख़ुद से ही यह सवाल पूछने की ज़रूरत है कि क्या महात्मा गांधी को याद करना बुद्धिमता है या फिर उन्हें भुला देना उचित होगा? हमारा मन का दर्पण ही इसका जवाब दे देगा। कहा भी है कि दर्पण झूठ न बोले।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

युगों-युगों तक प्रासंगिक रहेंगे गांधी

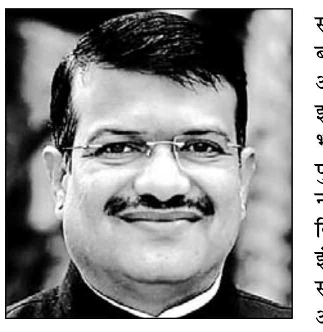

डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत

महात्मा गांधी! यह नाम सदियों तक भारत के इतिहास में गर्वोक्ति के साथ नये आयाम छूता रहेगा। भारत के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास जितना अधिक सघन, संघर्षमय और चुनौतीपूर्ण रहा है उतना ही गांधी का जीवन प्रखर, विरल और प्रभावशाली है। हम सब बहुत साधारण आत्माएं है लेकिन वे महात्मा है। गांधी के महात्मा होने के दर्जे करुणा, सहिष्णुता और शांति के दृष्टिकोणों से भरे पड़े है। पश्चिमी भारत के साधारण से गांव में जन्मे गांधी ने असाधारण करतब किए जिन से सारा विश्व चकित- आलोकित हुआ। वे उस समय के उन थोड़े से लोगों में थे जो पढ़े- लिखे प्रगतिशील नागरिक थे और अपने जीवन के हर क्षण का सदुपयोग अंग्रेजी हुकूमत की बर्बर यंत्रणाओं से भारत की मुक्ति के प्रयासों में करते थे। वे जब लंदन से बैरिस्टर बनकर लौटे तो उन्होंने भारत के ग़रीब, पिछड़े, आदिवासी और दलित- वंचित जनमानस के लिए अपने हृदय के पट खोल दिये। दक्षिण अफ्रीका से उनके सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण बदलाव शुरू हुआ जिसका प्रभाव आज अनेक वर्ष पर्यन्त वक्त-बेवक्त झलकता रहता है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों और अश्वेतों को वोट देने तथा फुटपाथ पर चलने तक का अधिकार नहीं था, गांधी ने इसका कड़ा विरोध किया और अंततः वर्ष 1894 में नटाल इंडियन कांग्रेस नामक एक संगठन स्थापित करने में सफल रहे। दक्षिण अफ्रीका में 21 वर्षों तक रहने के बाद वे वर्ष 1915 में वापस भारत लौट आए। उनके इस आंदोलन ने उन्हें वैश्विक केंद्र बना दिया था। अंग्रेजी हुकूमत उनसे भय खाने लगी थी और देशवासी उनमें महात्मा ढूँढना चाहते थे।

महात्मा गांधी जब भारत लौटे तो उन्होंने देश के उन करोड़ों नागरिकों को देखा जिनका जीवन अभावों और त्रासदियों के सिवाय कुछ नहीं था। इन सब दृश्यों से भयभीत होकर अपना संपूर्ण शेष जीवन गांधी जी ने सेवा-कार्य में लगा दिया। उन्होंने सूट-बूट और टाई को छोड़कर लंगोट धारण कर ली। हाथ में लकड़ी लिए और शरीर पर खादी लपेटे वे दुःख और असहायता के इस संसार में प्रतिरोध के सबसे बड़े प्रतीक बने। वे जितनी आत्मीयता से भारत की गलियों में पैदल घूमते हुए मीलों की यात्राएँ करते उतनी ही विनम्रता से वे चरखा कातते हुए स्वदेशी व स्वराज का मंत्र पढ़ते। वे जितने अधिक लोगों से उनका कष्टमय जीवन और अंग्रेजी सत्ता के अत्याचारों को सुनते उतनी ही त्वरित गति से वे देश में बुनियादी शिक्षा के महत्व का राग गाते। धर्म, प्रांत, जाति और राष्ट्रीयता से अलग-थलग पड चुके भारत में वे वैमनस्यता, छुआछूत और जातिवाद के ख़िलाफ़ वैष्णव जन तो तेने कहिए जै पीर पराई जाने रे' गाते रहते। दलितों को वे अछूत नहीं समकक्ष समझते थे, उनके हितों के लिए वे सत्ता के हर प्रतिरोध से बिना किसी हिचकिचाहट के लड़ते। भारत में जैसी परिस्थितियाँ उन दिनों थी उसमें किसी दलित का रसोई में पहुँचना अपराध जैसा था लेकिन गांधी जी इन सामाजिक विवशताओं के ख़िलाफ़ खड़े रहे। विशुद्ध आत्मबल के बल पर जलने वाली समाजवाद की यह लौ अंग्रेजी हुकूमत ही नहीं तत्कालीन समाज के लिए भी एक चोट थी, गांधी जी उन सबके बीच निर्लिप्त जीवन के प्रणेता थे।

महात्मा गांधी का संपूर्ण जीवन चरित्र अहिंसा के इर्द-गिर्द दिखता है। गांधी जी ने पूरी अहिंसक कार्य पद्धति को 'सत्याग्रह' का नाम दिया। चंपारण और बारदोली सत्याग्रह गांधी जी द्वारा केवल लोगों के लिये भौतिक लाभ प्राप्त करने हेतु नहीं किये गए थे, बल्कि तत्कालीन ब्रिटिश शासन के अन्यायपूर्ण रवैये का विरोध करने हेतु किये गए थे। गांधीजी का सत्याग्रह उनके प्रमुख हथियारों में से एक था जिसके समक्ष अक्सर अंग्रेजी हुकूमत झुक जाया करती थी। अंग्रेजों को विभिन्न आंदोलनकारियों द्वारा की जा रही हिंसक घटनाओं से अधिक भय इस बूढ़े से था जो अपनी विलक्षण प्रतिभा के दम पर पूरे भारत को एकजुट कर सकता था। प्रचार- प्रसार, विज्ञापन और संचार के किसी भी साधन के बिना उनके सत्याग्रह आंदोलनों में उमड़ने वाली भीड़ ने अंग्रेजों की चिंता बढ़ा दी थी। वे बाहरी जीवन शैली की भौतिक शुद्धि से अधिक अंतर्मन की शुद्धि पर बल देते थे। सविनय अवज्ञा आंदोलन, दांडी सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन ऐसे प्रमुख उदाहरण थे जिनमें गांधी जी ने आत्मबल को सत्याग्रह के हथियार के रूप में प्रयोग किया। गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के हथियार के सामने ब्रिटिश सरकार बेबस हो चुकी थी।

आजादी के बाद जब देश अराजकता और दंगों की आग में झुलस रहा था तो गांधी ने पैदल ही प्रभावित क्षेत्रों में चलने का साहस दिखाया। महात्मा गांधी ही थे जो माउंटबेटन के लिए बंटवारे के समय सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरे थे। 16 अगस्त 1946 को देश में नरसंहार की शुरुआत कलकत्ता से हुई। बंगाल के भीतरी हिस्सों में शुरू हुई इन हिंसक घटनाओं की चपेट में पूरा देश आ गया। विभाजन का यह दर्द विभीषिका बनकर नए-नवैले स्वतंत्र देश के सामने खड़ा था। बंगाल की आग ने बिहार को चपेट में ले लिया फिर संयुक्त प्रांत पंजाब ने मानवता के मुँह पर कालिख पोतना शुरू कर दिया। सम्पूर्ण आज़ादी के साथ इस देश को मिला था विभाजन से उपजा असंतोष और हिंसा। ऐसे विपरीत माहौल में गांधी ने देश की ग़रीब, झुग्गियों में रहने वाली, सदियों से शोषण झेलने वाली जनता के समक्ष जाने का साहसिक निर्णय किया। वे पहले बंगाल के हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में गए, फिर बिहार आकर लोगों को ढांढस बंधाया और उसके बाद दिल्ली गए जहाँ भारी संख्या में शरणार्थी अपने शांति- दूत का इंतजार जार रहे थे। बदले की भावना में जलते शरणार्थी समुदायों के बीच वे शांति का पाठ पढ़ते रहे। गांधी ने उन दिनों लगभग 116 मील की यात्रा की जिसमें अधिकांशतः वे पैदल ही रहे। लार्ड माउंटबेटन ने कहा कि पंजाब में काम कर रहे पचास हज़ार फौज के जवानों की तुलना में बंगाल में एक निहत्था आदमी ज़्यादा प्रभावशाली साबित हुआ।

महात्मा गांधी ने विश्व के बड़े नैतिक और राजनीतिक नेताओं जैसे- मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला और दलाई लामा आदि को प्रेरित किया तथा लैटिन अमेरिका, एशिया, मध्य पूर्व तथा यूरोप में सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों को प्रभावित किया। उनका विराट व्यक्तित्व देश की सीमाओं को पार करके अंतर्राष्ट्रीय ख्याति पा गया था।

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गांधी जी के बारे में कहा था कि भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करने में मुश्किल होगी कि हाड़-मांस से बना ऐसा कोई व्यक्ति भी कभी धरती पर आया था। आज जब दुनिया में वैश्वीकरण, मुक्त बाजारों, निजीकरण और उदारीकरण का चारों ओर बोलबाला दिखता है तो गांधी के न्याय सूत्र जो हिंसा, उग्रवाद, असमानता, गरीबी और विषमता के पार देखने की साहसिक दृष्टि रखते है, प्रासंगिक हो जाते है। ऐसे समय में महात्मा गांधी के विचार और शैली अधिक प्रासंगिक और मुखर हो जाते है। (लेखक गांधी विचार के अध्येता और राजनीतिक कार्यकर्ता है ।)

–डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत,
बीकानेर

भगवान के प्रसाद में भी अब मांसाहारी तत्व, मनुष्य की निकृष्टता अब चरम पर

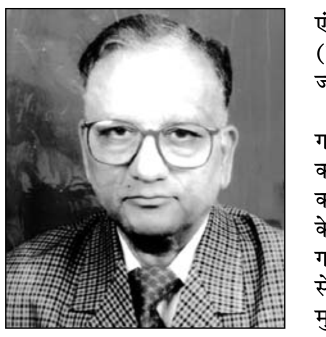

प्रो. (डॉ.) वीर बहादुर सिंह

मालूम नहीं हम कब से भगवान को भी माँसाहारी बनाने की चेस्टा में लगे हैं? प्रसाद के घी में पशु शरीर की चर्बी मौजूद, गजब हो रहा है। भारत में किसी भी खाद्य पदार्थ का शुद्ध मिलना अब संभव नहीं। देश को आज़ादी का यह एक तोहफा है जिस पर किसी को एतराज नहीं और न ही कोई इससे खुद को प्रभावित समझता हैबल्कि इसको दिनचर्या का एक हिस्सा मान लिया गया है। एक बड़ी महत्वपूर्ण बात इस सम्बन्ध में यह है कि जैसे जैसे मिलावट के पक्ष पर सरकार ने नकेल कसने के लिए नए नए क़ानून लागू किये मिलावट का धंधा उतना ही बढ़ता गया जो अब बिकराल हो गया।

हमें पता है कि मिलावट के निषेध के लिए पहले एक क़ानून होता था– 'प्रिवेंशन ऑफ़ फ़ूड अडल्ट्रेशन', तब अधिक जोर घी की शुद्धता और दूध व् उससे बने पदार्थों पर ही अधिक फोकस था, कानून की व्यापकता को आवश्यकता के अनुसार शनैः शनैः बढ़ाया गया और फलस्वरूप आज हम 'खाद्य प्राधिकरण' विस्तार में फूड सेफ्टी एंड स्टैण्डर्ड एक्ट या प्राधिकरण (फस्सीए या फस्सायी) के नाम से जानते हैं।

विभाग का दायरा विस्तृत तो हो गया, बड़े अफसरों और सहयोगी कर्मचारिओं की संख्या भी वेताहसा बढ़ा कर बिना किसी वांछित उद्देश्य की प्राप्ति के सरकारी खर्चा बेहिसाब बढ़ा लिया गया। यह खर्चा अंततः टैक्स की माध्यम से जनता की जेब से ही जाता है। इस मुद्दे और इसके जैसे अन्य पर कभी कोई प्रश्न अथवा जन आंदोलन नहीं उठा । जनता को आभास ही नहीं होता कि ऐसे सभी कार्य जनता की जेब से धन निकाल कर सरकार अपने अफसर और कर्मचारिओं व् उनके परिवारों का पेट पालती है। सरकार के इस कृत्य से हमें कोई परेशानी या सरोकार नहीं। हाँ, यह जानकर कि सरकार की फिजूल खर्ची से आम आदमी टेक्सों के भार से ग्रसित हो रहा है। आम आदमी का इन बातों का ज्ञान नहीं होने से अनेक टेक्सों के वेबजह भार से अनभिज्ञ है।

भगवान् के मंदिर परिसर और वहां संपन्न होने वाले सभी कार्यक्रम सनातनी परंपरा में सात्वकि प्रकृति के माने जाते हैं। मंदिर पर चढ़ने वाला प्रसाद, वहां से बटनें वाला प्रसाद तथा उस परिसर में उपस्थित दुकानों से बिकने वाला प्रसाद यदि दूषित, मिलावटी और खाने अयोग्य अवयवों से मिश्रित तथा बीमारी उत्पन्न करने वाले जीवाणुओं और विषाणुओं से आबद्ध हो तो फिर उस प्रसाद से सम्बंधित सभी लोग अपराधी हैं कम से कम भगवान् की नज़र में? जब तक यह जानकारी सार्वजानिक न हो जाय। तिरुपति बालाजी दक्षिण भारत में स्थित एक पौराणिक सनातनी मान्यताओं वाला प्रसिद्ध मंदिर है। उस मंदिर में अनेक प्रकार का चढ़ावा अर्पित होता है जिसमे मंदिर प्रबंधकों द्वारा बनाये और व् भगवान को भोग लगाने के प्रसाद और फिर वही प्रसाद दर्शनार्थिओं को बांटने और बेचने के लिए मुख्य अवयव होता है, के किसी आकस्मिक जांच या निरीक्षण के दौरान मिलावटी घी और फफूंदी से ग्रसित हुआ पाया गया, इस जानकारी के फैलने से जनता में हड़कंप मच गया। प्रसाद, मिलावटी और दूषित होना दोनों बातें मनुष्य के शरीर में रोग अथवा भीषण फ़ूड पॉइजनिंग कर सकते हैं।

यह एक अति गंभीर संकटीय मसला है जो मंदिर के प्रबंधकों की गलत कारगुजारी, मिलावट और भ्रष्टाचार की तरफ इंगित करता है साथ ही सबसे प्रसिद्ध सनातनी हिन्दू मंदिर की पवित्रता और विश्वशनीयता और लोक प्रियता को धूमिल भी करता है। भगवान् के प्रति ख़त्म होती निष्ठां अब एक गंभीर विषय बन चुका है। यह लेख लिखने से पहले मैनें इस विषय पर अपने एक मित्र से थोड़ी चर्चा की, तो उनका कहना था कि ये गोरखधंदा हो सकता है काफी समय से चल रहा हो फिर प्रसाद को दूषित और मिलावटी करने के पाप की सजा भगवान् ने दोषिओं को क्यों नहीं दी? उनका कहना तार्किक था भगवान् लगता है निष्क्रिय और निर्लिप्त बन गया है।

इस पक्ष पर लेखक बिना कोई टिप्पणी किये इतना ही कहेगा कि हिन्दू धर्मालम्बिओं की आस्था को यह एक गहरा आघात है। जिस समय यह लेख लिखा जा रहा है उसी समय खबर मिली कि बीकानेर में स्कूल में बच्चों को खाने में मिलने वाले मिड डे मील में से चूहा स्कूल के लोगों ने निकाला। सवाईमाधोपुर के प्रसिद्ध त्रिनेत्र गणेश भगवान् की मंदिर में निरीक्षण के दौरान 2200 किलोग्राम बना हुआ दूषित फफूंदी लगा प्रसाद जब्त कर गढ़े में गाडा गया, साथ ही स्टोर में रखे प्रसाद बनाने में प्रयुक्त अवयव भी फफूंदी संक्रमित मिले जिन्हें नष्ट किया गया।

देश में ऐसे सैकड़ों मांमले खोजने पर मिल जायेंगे। शिथिल डेमोक्रेसी, उदासीन प्रशासन, राजनितिक हस्तक्षेप, वकीलों और न्याय विज्ञों द्वारा ऐसे मसलों पर उदासीन व् पक्षपातपूर्ण रवैया उचित कड़ी और त्वरित सजा न देना, ऐसे कृत्यों को बढ़ावा देते हैं। देश की काबिल न्याय प्रणाली भी भगवान् के मंदिर की प्रतिष्ठा व् गरिमा को ठेस पहुँचाने में भागीदार माने जा सकते हैं।

लेखक स्वय तिरुपति बाला जी के दर्शन को एक से अधिक बार गया था और पाया था कि उस मंदिर के प्रसाद में जो लड्डू बनते, बटते, और बिकते हैं उनमे नमी/आद्रता या जल की मात्रा अधिक होती है, उन लड्डुओं को फफूंदी लगने के कारण उदयपुर बिना संक्रमण के नहीं ला सके। फफूंदी की अनेक किस्में विषाक्त होती हैं। प्रसाद या खाना ख़राब होने के लिए सरकार भी कुछ अनुकूल स्तिथियाँ उत्पन्न करवाने में सहायक बनती है। स्कूलों में बच्चों को मिलने वाले मिड डे मील की दास्तान भी रोचक है। स्कूल पढ़ने और पढ़ाने के लिए हैं न कि खाना बनाने और खाने खिलने के लिए। जीवाणु शास्त्र के अनुसार किसी भी पके हुए खाद्य में जीवाणुओं ;विषाणुओं की संख्या खाद्य का तापक्रम नार्मल आने के बाद बढ़ने लगती है जो प्रति 15 मिनट में दुगुनी होती जाती है। ये जीवाणु पेट में खतरनाक रसायन पैदा कर देते हैं जिनसे उपभोगकर्ता बीमार होकर मर भी सकता है। यह निर्भर करता है कि खाद्य में कितने और किस प्रकार के जीवाणु मौजूद हैं? इसलिए वर्तमान मिड डे मील का स्वरुप बदलने की भी शीघ्र आवश्यकता है।

दक्षिण के कुछ मंदिरों पर सूखा प्रसाद चढ़ाने की परंपरा भी है जिसमे भुना चना, चावल की लाई और शक्कर की रेवड़ी मिला या जाता है। लेखक ने खुद अपने शिक्षा काल में स्कूल में ऐसा ही नास्ता खाया है, विकल्प के तौर पर पोहै, पुलाव, चिवड़ा, लाई, उबले अथवा भुने चने, नमकीन चने/मूग/मौठ दिए जा सकते हैं जिनमे संक्रमण की सम्भावना अपेक्षाकृत बहुत कम होती है और पेट के लिए भी मित्रवत होते हैं।

स्कूल में मिड डे खाना पकने और खिलाने की अवधि में अनेक पदों पर खाद्य निर्माण में जीवाणुओं और किण्वकों द्वारा दूषित होने की पूर्ण सम्भावना होती है।

मैंनें क्रीम से बनने वाले मक्ख़न में इस संक्रमण पर अन्वेषण किये थे जो डेरी के एक मशहूर पत्रिका में 1964 में छपे है। लेखक की दृष्टि से शुष्क और निर्जलीय मिड डे मील और सूखा प्रसाद ही अपेक्षाकृत मंदिर के लिए सुरक्षित और वांछित है। वहीं किसी भी प्रकार की निर्मित मावा, छेना, बेसन, शक्कर से बनी मिठाई कभी भी जान लेवा स्तिथि पैदा कर सकती है।

–प्रो. (डॉ.) वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति व् खाद्य विज्ञ,
महाराणा प्रताप कृषि
एवं प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय, उदयपुर

---

100 वर्ष पूर्ण कर चुके मतदाताओं का सम्मान किया

राजगढ़, (निसं)। निर्वाचन आयोग के निर्देशन में अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर मंगलवार को विधानसभा क्षेत्र राजगढ़ लक्ष्मणगढ़ में 100 वर्ष पूर्ण कर चुके मतदाताओं का उपखंड प्रशासन की ओर से अभिनंदन किया गया।

इस दौरान शतायु मतदाताओं का मतदाताओं का माल्यार्पण एवं साफा बांधकर स्वागत किया गया। रिटर्निंग अधिकारी सीमा खेतान ने बताया कि इस दौरान चुन्नीलाल की कोठी राजगढ़ निवासी सोहनलाल सैनी 111 वर्ष एवं अवधूत दत्त आश्रम के पास निवासी रामप्यारी 100 वर्ष एवं श्रीनगर बांदेन निवासी रामादेवी 102 वर्ष का फूलमाला एवं प्रमाण पत्र से सम्मान किया गया।

लोकतंत्र के आधार स्तंभ शतायु मतदाताओं का माला एवं साफा बांध प्रमाण पत्र प्रस्तुत कर लोकतंत्र की महिमा को गौरवान्वित किया। इस दौरान वृद्ध जन ने संस्मरण भी सुनाए। निर्वाचन विभाग से जुड़े नायब तहसीलदार छोटे लाल मीणा,रामावतार सैनी सहायक प्रशासनिक अधिकारी, हरिशंकर शर्मा सहायक प्रोग्रामर, धीरज शर्मा सूचना सहायक, श्यामलाल शर्मा पर्यवेक्षक, मनमोहन शर्मा बीएलओ एवं दीपक कुमार, दिगंबर एवं जितेंद्र कुमार सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

राजगढ़ लक्ष्मणगढ़ में 100 वर्ष पूर्ण कर चुके मतदाताओं का अभिनंदन किया गया।

राशिफल

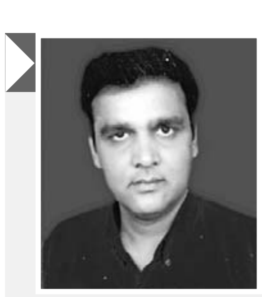

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 2 अक्टूबर, 2024

अश्विन मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, बुधवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 12:23 तक, ब्रह्म योग रात्रि 3:21 तक, चतुष्पद करण दिन 10:59 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-वृष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 12:23 से सूर्योदय तक है। कुमार योग रात्रि 12:19 से सूर्योदय तक है। आज देवपितृकार्य अमावस्या, सर्वपितृ श्राद्ध, सिंजा माता पूजा और पितृपक्ष पूर्ण होगा। आज महात्मा गांधी और शास्त्री जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:20 तक, शुभ 10:48 से 12:16 तक, चर 3:13 से 4:41 तक, लाभ 4:41 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:24, सूर्यास्त 6:09

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और अनावश्यक धन खर्च होगा।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। धन हानि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। नवीन कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

मीन
घर-परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।